ओम् शान्ति 11-3-22 मधुबन

''दादी गुल्जार जी की प्रथम पुण्य तिथि पर - विशेष भोग तथा अव्यक्त वतन का दिव्य सन्देश''
(मोहिनी बहन)

(गुल्जार दादी जी के उच्चारे हुए मधुर महावाक्य - मोहिनी बहन द्वारा)

ओम् शान्ति। इस समय सारे विश्व का ब्राह्मण सिकीलधा परिवार सामने है। आप सभी साकार में हैं, पर इस समय सभी संगठित रूप में बाबा के सामने दादी भी देख रही है। अब तो सभी को बाबा का यही आदेश है कि निरन्तर सदा खुश रहो, निर्विघ्न रहो। ईश्वरीय स्नेह के सूत्र में सभी दुआयें दो और दुआयें लो।

वतन का दिव्य सन्देश :

आज विशेष भोग लगाने के निमित्त जब याद में बैठी तो बाबा ने वतन में बुलाया। आज वतन में बहुत ही सुन्दर दृश्य था। आज सभी पूर्वज आत्मायें वतन में इमर्ज थी। उन सबके बीच में एक अति सुन्दर कमल आसन था, उस पर दादी जी विराजमान थी। हम साकार वतन वासी भी वहाँ इमर्ज थे। दोनों एक दूसरे को देख रहे थे। यह बहुत ही सुन्दर मिलन था, कुछ क्षणों तक यह दृश्य चला। फिर बापदादा और हमारी दादी जी दोनों सामने थे, तो मैंने कहा दादी जी आज बाबा के साथ-साथ आपको भी सभी ने बहुत-बहुत याद प्यार दी है और आपके लिये बहुत प्रेम से सारे परिवार के तरफ से भोग भी भेजा है। तो बाबा दादी जी को देख रहे थे और दादी जी बाबा को देख रही थी। बाबा ने भोग स्वीकार किया और दादी जी को भी बहुत प्यार से भोग स्वीकार कराया।

दादी जी बाबा के प्रेम में एकदम लवलीन थी। दादी जी ने बाबा को देखते हुए कहा, बाबा सभी आपके प्रेम में समाये हुए हैं। तो बाबा मुस्कराते हुए बोले, आज तो आपके प्रेम में समाये हुए हैं। तो दादी जी ने कहा नहीं बाबा, आपके स्नेह में समाये हुए हैं। ऐसे दोनों एक दो को देखते हुए कह रहे थे। तो मैंने कहा दोनों के ही स्नेह में सभी समाये हुए हैं। ऐसे कहते हुए बाबा के साथ दादी जी भी सारे विश्व को दृष्टि दे रहे थी। बाबा ने कहा कि सभी बच्चों के पुरुषार्थ में, स्थिति में जब उन्नति होती है तब दूसरे तरफ सारे विश्व में भी हलचल होती है। अब हलचल हो भी रही है और बढ़ेगी। जब बहुत हलचल हो रही है तो सभी बच्चे सोचते हैं कि हम योग लगायें, ज्यादा तपस्या करें फिर जब हलचल थोड़ी कम होती है तो वह लगन नहीं रहती है। तो आज बाबा बच्चों को यही कहते हैं कि अब अपने पुरुषार्थ को, योग अग्नि को सदा के लिये ज्वालामुखी रूप में प्रज्वलित रखो क्योंकि विश्व की सभी आत्माओं को इस समय कई तरह का बहुत ही भय है। ऐसे समय पर आप सभी बच्चों के संकल्पों से जो वातावरण बनेगा, उससे सभी आत्माओं के अन्दर शान्ति, प्रेम, आशा उत्पन्न होगी क्योंकि यहाँ पर ही आप सभी को यह अनुभव कराना है, जिस अनुभव से उनका ऊपर में, एक की तरफ ध्यान जायेगा। तो वर्तमान समय की सेवा ही यह है कि सभी योगबल से सारे विश्व की आत्माओं को शान्ति का अनुभव कराओ, जिससे उन्हें लगे कि हमको ऊपर से यह प्राप्ति आ रही है। तो बाबा ने कहा बच्चों से पूछो कौन-कौन ऐसे निरंतर योगबल से सेवा करेगा ? वो हाथ उठाये।

फिर बाबा ने दादी जी को बोला, आप कुछ बोलो तो दादी जी ने मुस्कराते हुए कहा कि बाबा मैं आपसे सहमत हूँ और मैं भी यही चाहती हूँ कि अब सभी का पुरुषार्थ निरंतर चले। ऐसे नहीं कि कभी बहुत अच्छा पुरुषार्थ हो फिर कभी अलबेले हो जायें। निरंतर पुरुषार्थ करते हुए सारे विश्व में यह प्रसिद्ध हो कि यह सब एक बाबा की श्रीमत पर चलते, एक हैं और एक के हैं, ऐसी एकता दिखाई दे। अब हर एक को संगठित रूप से वा व्यक्तिगत रूप से यह दृढ़ संकल्प लेना है कि मुझे बाबा के समीप रह, बाबा जैसा सम्पन्न बनना है। तो बाबा ने

कहा कि अभी यह जो थोड़ा सा समय है उसमें अपने लक्ष्य प्रमाण उस मंजिल तक पहुँचना ही है। फिर मैंने बाबा को कहा कि आज दादी जी के लिए बहुत रिक्वेस्ट आई है कि दादी जी सभी से मिलने के लिए आयें। तो दादी मुस्कराती रही कुछ नहीं बोली।
(थोड़े समय के लिये दादी जी मोहिनी बहन के तन में आई और सभी से नयन मुलाकात की तथा यज्ञ का भोग स्वीकार किया और कुछ मधुर महावाक्य भी उच्चारे, जो ऊपर लिखे हुए हैं)

फिर बाबा सभी बच्चों को बहुत-बहुत प्रेम भरी शक्तिशाली दृष्टि देते हुए बोले, बच्चों का हर शुद्ध संकल्प बाबा के पास पहुँचता है और बाबा हर संकल्प का रेसपांड भी करते हैं। ऐसा कहते हुए फिर से बाबा ने और दादी जी ने आप सभी के प्रति न सिर्फ यादप्यार दी परन्तु वरदानी दृष्टि से जैसे बाबा सभी को आशीर्वाद दे रहे हैं, यह देखते हुए मैं यहाँ पर आप सबके बीच में आ गई। ओम् शान्ति।

सतगुरूवार 10-3-22 वतन का दिव्य सन्देश – रुकमणी बहन

आज प्यारे बाबा के पास भोग लेकरके पहुंची, और बाबा को सभी ब्राह्मण बच्चों की बहुत-बहुत स्नेह भरी यादप्यार दी। फिर बाबा हमसे पूछने लगे कि बच्ची साकार वतन में क्या चल रहा है। मैंने कहा बाबा आपको तो मालूम ही है, क्या चल रहा है। ऐसे कहते हुए बाबा ने वतन का दृश्य भी कुछ अद्भुत, कुछ निराला दिखाया। बाबा ने कहा कि बच्ची जिस प्रकार साकार वतन में विशेष गुल्जार बच्ची के निमित्त बच्चे आये हुए हैं और सभी ब्राह्मण बच्चों के संकल्प, बाप की याद के साथ बच्ची की याद भी दिल में समाई हुई है। उसी प्रकार सूक्ष्म वतन भी विशेष बच्ची के निमित्त बाबा भी सूक्ष्म रीति से तैयार कर रहे हैं। बाबा ने कहा जिस प्रकार लास्ट समय में बाबा ने बच्ची को पलकों पर बिठाकर अव्यक्त वतनवासी बनाया, वह अन्त का सीन, अन्त का समय कई बच्चों के सामने इमर्ज है ही। कई बच्चों ने अनुभव भी किया। बाबा जब ऐसे सुना रहे थे, सुनाने के साथ बाबा के साथ ही दादी भी एकदम इमर्ज हो गई। सामने दादी को देख मैंने कहा सभी की याद लेकरके पहुंची हूँ। दादी बड़े प्यार से कहने लगी जिसकी याद होती है जिससे स्नेह होता है, जिससे प्यार होता है, उस जैसा ही बनना होता है। जैसे हम सभी दादियों का बापदादा से बहुत प्यार रहा, सभी दादियों ने एक ही लक्ष्य रखा बाप समान बनना है। तो दादी भी कहती कि दादी से प्यार है, सभी दादी के प्यार में बाबा के घर में पहुंचे हैं। तो प्यार की निशानी उन जैसा बनके दिखाना। भल दादी के साथ बाबा थे, डबल इंजन थे। फिर भी हमने भी इतना ही सूक्ष्म पुरुषार्थ किया बाप समान बनने का। तो बाबा ने कहा बच्ची ने समान बनने का लक्ष्य रखा, तो अन्त के समय बाप के नयनों में समा गई क्योंकि बाबा ने बच्ची के नयनों के द्वारा जो अन्त तक कार्य कराया, सेवा कराई, तो लास्ट समय भी बाबा बच्ची को पलकों पर बिठाके लेकर गये। फिर बाबा और दादी कहने लगे कि बाबा के घर में जो भी आये हैं। सभी का प्यार दादी से है। जो नहीं भी आये हैं वो भी सूक्ष्म में बाबा और दादी को यादप्यार दे रहे हैं, बाबा का और दादी का स्नेह उन्हें खींच रहा है।
फिर बाबा ने विशेष सतगुरुवार के दिन की सभी को बहुत-बहुत स्नेह भरी यादप्यार दिया और बहुत प्यार से भोग स्वीकार किया और गुल्जार दादी को भी खिलाया। फिर बाबा ने कहा कि देखो दूर देश के बच्चे भी उड़ते-उड़ते बाबा के घर में पहुंच गये हैं, इस बात की बाबा को और दादी को भी खुशी है। बाबा ने और दादी ने सभी को बहुत स्नेह भरी दिल की यादप्यार दिया। आज वतन का नज़ारा बहुत अद्भुत था। बाबा और दादी सभी के ऊपर स्नेह के पुष्पों की जैसे बरसात कर रहे थे। ऐसा सुन्दर दृश्य देखते मैं नीचे पहुंच गई। ओम् शान्ति।